ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 218**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में महिलाओं का राजनैतिक सशक्तिकरण

1. डॉ0 प्रीति सिंह
2. डॉ0 अभिषेक कुमार सिंह

1. एम.ए., बी.एड., पी–एच0डी0, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर–वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन संकाय एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद (उ0प्र0), भारत

Received- 01.03.2022, Revised- 06.03.2022, Accepted - 09.03.2022 E-mail: preetysingh963@gmail.com

सारांशः – *भारत वर्ष के वक्षस्थल पर अवस्थित बुन्देलखण्ड प्रागैतिहासिक काल से अपने वनों उपवनों, पशु–पक्षियों सर सरिताओं और पर्वतमालाओं से आच्छादित रमणीय होने के कारण आदिम मनुष्य की कर्मस्थली रही है।' भारत वर्ष के ठीक मध्य में स्थित यह क्षेत्र चार प्रमुख नदियों के आयत में आबद्ध है और इस पावन तपस्थली को केशव, तुलसी, बिहारी श्रीपति, गिरिधर, पद्माकर, मैथलीशरण गुप्ता आदि सरस्वती पुत्रों ने अपनी सांस्कृतिक साधना से साधा है। आदि काल से जब से यह सृष्टि बनी है चाहे त्रेता युग हो या द्वापर कलयुग हो या सतयुग बुन्देलखण्ड की भूमि इन्सान को तो क्या भगवान को भी सदा प्रिय रही, रहीम दास जी कहते हैं–*

कुंजीभूत शब्द– वक्षस्थल, अवस्थित, प्रागैतिहासिक काल, पर्वतमालाओं, सांस्कृतिक साधना, कलयुग, सतयुग, आच्छादित।

चित्रकूट में बस रहे रहिमन अवध नरेश जोहि पे विपदा परत है, सो आवे यह देश इतिहास के पन्ने इस बात की गवाही देते हैं, कि भारत की आजादी के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ज्वाला मेरठ की छावनी में भड़की थी। परन्तु उसकी लौ की आँच बुन्देलखण्ड की सरजनी तक आयी[2] किन्तु इन ऐतिहासिक तथ्यों के पीछे एक सच्चाई छुपी हुयी है, वह यह है कि स्वतंत्रता की लड़ाई करने वाले मेरठ के संग्राम से भी कुछ साल पहले बुन्देलखण्ड की पावन धरा एवं सतो की नगरी चित्रकुट में एक क्रांति का बिगुल बजा, इस क्रांति की नायक थी बुकीनशी महिलाएं जिन्हें घाघरा पलख कहा गया, हालांकि स्वतंत्रता के संघर्ष में मशाल सुलगाने वाली इन शूखीरो को जगह नहीं मिल पायी। सच पूछा जाये तो यह एक वास्तविक जन आन्दोलन था, जिनका कोई नेता नहीं था बल्कि आन्दोलनकारी आम जनता थी। पुरुष एवं महिला समाज के दो महत्वपूर्ण पहलू है उन्होंने हमेशा सुख एवं दुःख में बराबर रुप से सहभागिता निभायी है,[3] जहाँ एक तरफ पुरुषों ने अपने आप को गुलामी से आजाद करने की कोशिश की वहीं दूसरी ओर महिलाएं भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रही।

भारत वर्ष के गौरवशाली एवं विस्तृत इतिहास की ओर दृष्टिपात करने से ये तथ्य उजागर होता है कि पुरुष एवं महिला कंधे से कंधा मिलाकर भागीदारी की है, फिर चाहे जमीन को लेकर किया गया विद्रोह हो या मातृभूमि के लिये बुन्देलखण्ड की महिलाएं हमेशा तत्पर रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त से यदि बुन्देलखण्ड में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व व सशक्तिकरण की बात करें तो बुन्देलखण्ड में अब तक 15 महिला विधायक चुनी जा चुकी है, जिनमें सबसे ज्यादा 11 दलित महिला और तीन पिछड़े वर्ग और 1 सामान्य वर्ग से ताल्लुक रखती है। बेनी बाई प्रथम महिला विधायक थी जो बुन्देलखण्ड से चुनी गयी। सन् 1962 में कांग्रेस पार्टी की ही सियादुलारी ने बाँदा जिले की मऊरानीपुर सीट से जीत पायी। सन् 1980 ई0 में जब देश में एक बार पुनः चुनाव हुये तो बेनी बाई जी झाँसी को बबीना सीट से जीत दर्ज की, वर्ष 1989 में काग्रेंस की सिया दुलारी जी पुनः मानिकपुर सीट से विधायक हुयी।

बीच के इन सालों में काफी लम्बा वक्त ऐसा रहा जब बुन्देलखण्ड के राजनीतिक इतिहास में महिलाओं का लखनऊ तक पहुंच पाना नामुमकिन सा हो गया। साल 2002 का जब चुनाव हुआ तो समाजवादी पार्टी के टिकट से अंब्रेस कुवारी महोबा की चरखारी सीट से विधायक चुनी गयी, उसके दस साल बाद 2012 के चुनाव में मऊरानीपुर से रश्मि आर्या जीती, वही दूसरी ओर चरखारी सीट से उमा भारती जी जीती।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ओझा, प्रभुदत्त कान्त, 'बुन्देलों का इतिहास' इश पब्लिकेशन, बांदा गजेटियर, पृ0 180.
2. शर्मा, डॉ0 शैली, 'पब्लिक स्कूल मार्डनाइजेशन ऑफ इण्डिया।
3. एचिसन 'ट्रीटीज एंगजेन्टस एण्ड सनडर्स, पृष्ठ–46.

*****

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक